मानवता के लिए नेत्रदान/अंगदान/देहदान

अखबारों की सुर्खियां

मिसाल — मेडिकल कॉलेज को सौंपा राज्य आंदोलनकारी जनार्दन पंत का पार्थिव शरीर

परिजनों की मौजूदगी में देहदान, छात्रों की पढ़ाई में आएगा काम

माई सिटी रिपोर्टर

देहरादून। राज्य आंदोलन में अहम भूमिका निभाने के साथ ही समाजसेवा, साहित्य के क्षेत्र में योगदान देने वाले एडवोकेट जनार्दन पंत का पार्थिव शरीर मेडिकल कॉलेज प्रशासन को सौंप दिया गया। अब मेडिकल कॉलेज के छात्र शोध करने के साथ ही उनके पार्थिव शरीर से चिकित्सकीय ज्ञान लेंगे।

जनार्दन पंत ने जीते जी देहदान का संकल्प लिया था। बहुस्तरीयता की परिजनों ने उनका पार्थिव शरीर एनाटॉमी विभाग को सौंप दिया। पंत की सेवानिवृत्त शिक्षणिकारी पत्नी माया पंत, बेटा भूपेश पंत, उपजिलाधिकारी बहू सोनिया पंत, बेटी डॉ. रश्मि पंत, बबीता को विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश मौर्य ने पौधा भेंट किया। इस दौरान दधीचि देहदान समिति के अध्यक्ष डॉ. मुकेश गोयल, महासचिव नीरज पांडेय उपस्थित रहे। बता दें कि कुमाऊं मंडल के प्रमुख राज्य आंदोलनकारियों में से एक स्वर्गीय जनार्दन पंत ने अपना पूरा जीवन समाजसेवा में समर्पित किया।

दून मेडिकल कॉलेज में जनार्दन पंत के पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित करतीं पत्नी माया पंत, साथ में अन्य लोग। अमर उजाला

शोध के लिए 17 कैडेवर

राजकीय मेडिकल कॉलेज में अब 17 पार्थिव शरीर (कैडेवर) हो गए हैं। इनके जरिए छात्र-छात्राओं को अध्ययन कराया जा रहा है। बीच में बने कैडेवर स्टोरेज टैंक में पार्थिव शरीरों को पानी से अच्छा भरा तक सुरक्षित रखा जाता है।

देहदान का संकल्प

डॉ. मुकेश गोयल ने बताया कि पूर्व आयकर आयुक्त बीजेपी नगर, आरकेडिया निवासी दधीचि देह न मुकुट विकास, जेएम ग्राम निवासी कविता माया ने देहदान का संकल्प लिया है। बंजारावाला निवासी कुंदन सिंह राना, पानी माल राना, बेटा पवेश राना, बहू रिंकू राना ने अपना पूरा जीवन देहदान का संकल्प लिया है।

---

myCity — न्यूज कैप्सूल

देश को निरामय बनाने के लिए देहदान जरूरी : आलोक

देहरादून। अंगदान एवं देहदान के लिए लोगों का प्रेरित करने के लिए दधीचि देहदान संस्था की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रविवार को यमुना कॉलोनी स्थित ऑफिसर्स क्लब में कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता व संस्था के संस्थापक आलोक कुमार मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने कहा कि लोगों को देहदान का संकल्प लेना होगा तभी देश निरामय बना रहेगा। ऋषिकेश एम्स के एनाटॉमी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बृजेंद्र सिंह, दून अस्पताल के एनाटॉमी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. महेंद्र पंत, निर्मल आश्रम संस्थान के आत्मप्रकाश बाबूजी, पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के आचार्य स्वामी कैलाशानन्द गिरि ने भी विचार व्यक्त किए। संवाद

यमुना कालोनी स्थित आफिसर क्लब में दधीचि देहदान समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी महाराज (दायें)। साथ में संस्था के संस्थापक आलोक कुमार, अध्यक्ष डा. मुकेश गोयल (बायें) और मुख्य संयोजक नेत्रदान एवं रक्तदान प्रकल्प श्री निर्मल आश्रम संस्थान, ऋषिकेश आत्म प्रकाश बाबूजी (दायें)। • जागरण

देहदान सबसे बड़ा महादान : कैलाशानंद

जागरण संवाददाता, देहरादून : निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी महाराज ने कहा कि आत्मा भगवान का रूप है, जिसको पहचानने की आवश्यकता है। मनुष्य को अपने जीते जी देहदान करना चाहिए। जिससे उसके शरीर के अंग किसी जरूरतमंद के काम आ सकें। वेद पुराण, भागवत गीता, रामचरित मानस में समाज के लिए मनुष्य जीवन को उपयोगी बताया गया है।

रविवार को यमुना कालोनी स्थित आफिसर्स सभागार में दधीचि देहदान समिति की ओर से देहदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंच का संचालन नीरज कुमार ने किया। वरिष्ठ अधिवक्ता और दधीचि देहदान संस्था के संस्थापक आलोक कुमार ने कहा कि देहदान करने वाला व्यक्ति आधुनिक युग के दधीचि के समान है। देहदान का संकल्प लेने वाले व्यक्ति को अपने शरीर को स्वस्थ रखने की जरूरत है।

दून अस्पताल के एनाटामी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. महेन्द्र पंत ने कहा कि देहदान का संकल्प लेने के बाद व्यक्ति को अपने स्वजन को इसकी जानकारी देनी चाहिए। जिससे व्यक्ति के मृत होने पर उसके अंग दूसरे मरीज के काम आ सके। निर्मल आश्रम संस्थान ऋषिकेश के मुख्य संयोजनकर्ता आत्मप्रकाश बाबू ने कहा कि जीते जी शरीर को दान करना सबसे पुण्य का काम है। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष मुकेश गोयल, नैनीताल हाई कोर्ट के असिस्टेंट सालिसिटर जनरल राकेश थपलियाल, दून अस्पताल के डा. राजेश मौर्य, विश्व संवाद केंद्र के निदेशक विजय कुमार, विजय कुमार, गगन अग्रवाल, सुमित अदलखा, कृष्ण कुमार अरोड़ा, राकेश थपलियाल, लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल आदि मौजूद रहे।

आयोजन

- देहदान करने वाला व्यक्ति आधुनिक दधीचि के समान
- कहा, आत्मा भगवान का रूप है, जिसको पहचानने की आवश्यकता है
- पुराणों में समाज के लिए मनुष्य जीवन को उपयोगी बताया गया है

स्था — मानवता की भलाई को देह दान कर गए डा. बसंत

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में विज्ञानी रहे डा. बसंत का 16 दिसंबर को हो गया था निधन

जागरण संवाददाता, देहरादून : दान की परंपरा सदियों पुरानी है। कुछ लोग अपने और परिवार के कल्याण के लिए अन्न, वस्त्र, द्रव्य, गो और भूमिदान करते हैं, तो कुछ ऐसे भी हैं जो मानव कल्याण के लिए पंचतत्वों से बनी काया (देह) का दान करने से भी नहीं हिचकते। ऐसा ही कुछ एकता एवेन्यू, कैनाल रोड निवासी 70 वर्षीय बुजुर्ग डा. बसंत कुमार ने भी किया है। उन्होंने अपनी देह मानवता की भलाई के लिए दान की है।

दरअसल, असुरों से देवताओं की रक्षा के लिए महर्षि दधीचि ने देहदान कर इस परंपरा की शुरुआत की थी। उनकी अस्थियों (हड्डी) से निर्मित धनुष से ही दैत्यों का संहार हुआ था। अब कलियुग के दधीचि इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। दुनिया से अलविदा कहने के बाद उनकी देह चिकित्सीय शोध के काम आ रही है। दधीचि देहदान समिति के महासचिव नीरज पांडेय ने बताया कि भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में वैज्ञानिक रहे डा. बसंत कुमार का 16 दिसंबर को निधन हो गया था। उनकी अभिलाषा मृत्युपरांत अपनी देह को चिकित्सा शिक्षा के लिए समर्पित करने की थी। उनकी दो बेटियां हैं, ईवा और ईशा। बड़ी बेटी फिनलैंड में रहती है जो तुरंत नहीं पहुंच सकती थी। ऐसे में उनकी देह जिला चिकित्सालय (कोरोनेशन अस्पताल) की मोर्चरी में रखवा दी गई थी। उनकी अभिलाषा को पूरा करने के लिए समिति ने दून मेडिकल कालेज के शरीर रचना विभाग में संपर्क किया। जिन्होंने अविलंब उनकी देह को शव लेपन प्रक्रिया के तहत सुरक्षित रखने के लिए अपनी मोर्चरी में रखा। उनकी बड़ी बेटी आज दून पहुंच जाएंगी। बेटियों की उपस्थिति में दून राजकीय मेडिकल परिसर में बेटियों व अन्य स्वजन देहदान की औपचारिकता पूरी करेंगे।

महादान

देह दान करने वाले डा. बसंत कुमार का फाइल फोटो • साभार स्वजन

- उनकी इच्छा के अनुसार स्वजन ने दून मेडिकल कालेज को देहदान का संकल्प किया पूरा

आप भी कर सकते हैं देहदान

पांडेय ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति देहदान, नेत्रदान या अंगदान का इच्छुक है तो मोबाइल नंबर 9897287021, 9412438100, 7906600421 व 9568893115 पर संपर्क कर सकता है। संस्था के कार्यकर्ता घर जाकर संकल्प फार्म भरवाएंगे। इसमें परिवार के दो सदस्यों की सहमति एवं जानकारी आवश्यक है, ताकि मृत्यु उपरांत संकल्प व्यर्थ ना जाए।

उत्तराखंड

आधुनिक दधीचि बने 40 लोगों ने लिया देहदान का संकल्प

देहदान से बचती हैं लोगों की जिंदगियां : गोयल

देहरादून, वरिष्ठ संवाददाता। दधीचि देह दान समिति का प्रथम वार्षिकोत्सव 26 फरवरी को मनाया जाएगा। वार्षिकोत्सव पर कार्यक्रम अपराह्न तीन बजे से दून मेडिकल कॉलेज में होगा। इसमें मुख्य अतिथि स्वास्थ्य मंत्री डॉ. धन सिंह रावत और विशिष्ट अतिथि मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. आशुतोष सयाना होंगे। समिति के अध्यक्ष डॉ. मुकेश गोयल और कोषाध्यक्ष कृष्ण कुमार अरोड़ा ने बताया कि मानवता के लिए नेत्रदान, अंगदान और देहदान जरूरी है। समिति इसके लिए लोगों को निरंतर प्रेरित कर संकल्प पत्र भरवा रही है। उन्होंने लोगों से देहदान की अपील करते हुए कहा कि इससे दे न केवल शोध के काम आती है बल्कि इससे लोगों की जिंदगियां भी बचती हैं।

महासचिव एडवोकेट नीरज पांडेय, उपाध्यक्ष भारत गगन अग्रवाल और सचिव सुमित अदलखा ने कहा कि नेत्रदान, अंगदान और देह दान करना सबसे बड़ा पुण्य का काम है, इसके लिए सभी को आने आने की जरूरत है।

देहदान का संकल्प लेने वालों को नवाजा

- ऑफिसर्स क्लब यमुना कॉलोनी में हुआ कार्यक्रम
- देहदान को लेकर फैली भ्रांतियों को बताया मिथ्या

देहदानियों को प्रमाणपत्र देकर किया सम्मानित

जाते-जाते दे गए जनसेवा की सीख

जागरण संवाददाता, देहरादून : राज्य आंदोलनकारी और अधिवक्ता जनार्दन पंत ने मानवता की मिसाल पेश की है। उन्होंने जीते जी अपना जीवन जनसेवा में गुजारा और अब दुनिया से जाते-जाते भी वह जनसेवा की प्रेरणा दे गए। उन्होंने अपनी देह चिकित्सा विज्ञान के लिए दान कर दी है। उनकी अंतिम इच्छा के अनुरूप स्वजन ने दून मेडिकल कालेज पहुंचकर देहदान से जुड़ी औपचारिकताएं पूरी कीं। इस दौरान उनकी आत्मा को शांति के लिए गायत्री मंत्र का पाठ किया गया।

पिथौरागढ़ निवासी जनार्दन पंत ने वर्ष 2011 में हल्द्वानी में रहते देहदान का संकल्प लिया था। पिछले कुछ वर्षों से स्वास्थ्य कारणों से वह पुत्र भूपेश के साथ दून के अमन विहार, सहस्त्रधारा रोड में रह रहे थे। बुधवार सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली। 83 वर्षीय पंत अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी पत्नी माया जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) डीडीहाट से उप प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हैं। वह सहायक शिक्षा निदेशक भी रहीं। उनका एक बेटा व दो बेटियां हैं। बेटे भूपेश पत्रकारिता से जुड़े हैं। वहीं, उनकी पुत्रवधू सोनिया पंत वर्तमान समय में एसडीएम कीर्तिनगर हैं। स्व. पंत ने अपना पूरा जीवन समाज सेवा में समर्पित कर दिया। पिथौरागढ़ की बेरीनाग तहसील की स्थापना के लिए भी उन्होंने एक बड़ा जन आंदोलन चलाया था, जिसके प्रभाव से बेरीनाग तहसील अस्तित्व में आई। उनके ताऊ भी स्वतंत्रता आंदोलन में कुमाऊं मंडल में गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख सेनानी रहे। उनका पूरा परिवार जिस सेवाभाव से अनेकों वर्षों से देश सेवा, जनसेवा आदि कार्यों में तत्पर है, वह सेवाभाव सभी के लिए अनुकरणीय है।

इस दौरान दून मेडिकल के शरीर रचना विभाग के चिकित्सक डा. राजेश मौर्य, डा. पीयूष व अन्य चिकित्सक और दधीचि देहदान समिति देहरादून के अध्यक्ष डा. मुकेश गोयल, महासचिव नीरज पांडे, कोषाध्यक्ष कृष्ण कुमार अरोड़ा, सदस्य प्रो. अतुल गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

जनार्दन पंत फाइल फोटो • सांझा

- राज्य आंदोलनकारी जनार्दन पंत की अंतिम इच्छा के अनुसार स्वजन ने किया देहदान
- स्वजन ने दून मेडिकल कालेज अस्पताल पहुंचकर देहदान से जुड़ी औपचारिकताएं पूरी कीं

आमजन लें अंगदान का संकल्प : डा. मुकेश

देहरादून : दधीचि देह दान समिति के अध्यक्ष डा. मुकेश गोयल ने आमजन से अंगदान करने का संकल्प लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन को बचाने में अंगदान अहम साबित होता है। इसके प्रति लोगों को जागरूक होना चाहिए।

शनिवार को प्रेस क्लब में पत्रकारों से वार्ता करते हुए डा.गोयल ने बताया कि मनुष्य के निधन के बाद उसके शरीर के अंग किडनी, लीवर, फेफड़े, आंख यदि समय पर किसी जरूरतमंद व्यक्ति को मिल जाए तो उसका जीवन बच सकता है। इस मौके पर समिति के महासचिव नीरज पांडे, कोषाध्यक्ष कृष्ण कुमार अरोड़ा आदि मौजूद रहे। (जासं)

यमुना कालोनी स्थित आफिसर क्लब में दधीचि देहदान समिति की ओर से आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी महाराज (दायें)। साथ में संस्था के संस्थापक आलोक कुमार, अध्यक्ष डा. मुकेश गोयल (बायें) और मुख्य संयोजक नेत्रदान एवं रक्तदान प्रकल्प श्री निर्मल आश्रम संस्थान, ऋषिकेश आत्म प्रकाश बाबूजी (दायें)। • जागरण

देहदान सबसे बड़ा महादान : कैलाशानंद

जागरण संवाददाता, देहरादून : निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी महाराज ने कहा कि आत्मा भगवान का रूप है, जिसको पहचानने की आवश्यकता है। मनुष्य को अपने जीते जी देहदान करना चाहिए। जिससे उसके शरीर के अंग किसी जरूरतमंद के काम आ सकें। वेद पुराण, भागवत गीता, रामचरित मानस में समाज के लिए मनुष्य जीवन को उपयोगी बताया गया है।

रविवार को यमुना कालोनी स्थित आफिसर्स सभागार में दधीचि देहदान समिति की ओर से देहदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंच का संचालन नीरज कुमार ने किया। वरिष्ठ अधिवक्ता और दधीचि देहदान संस्था के संस्थापक आलोक कुमार ने कहा कि देहदान करने वाला व्यक्ति आधुनिक युग के दधीचि के समान है। देहदान का संकल्प लेने वाले व्यक्ति को अपने शरीर को स्वस्थ रखने की जरूरत है।

दून अस्पताल के एनाटामी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. महेन्द्र पंत ने कहा कि देहदान का संकल्प लेने के बाद व्यक्ति को अपने स्वजन को इसकी जानकारी देनी चाहिए। जिससे व्यक्ति के मृत होने पर उसके अंग दूसरे मरीज के काम आ सके। निर्मल आश्रम संस्थान ऋषिकेश के मुख्य संयोजनकर्ता आत्मप्रकाश बाबू ने कहा कि जीते जी शरीर को दान करना सबसे पुण्य का काम है। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष मुकेश गोयल, नैनीताल हाई कोर्ट के असिस्टेंट सालिसिटर जनरल राकेश थपलियाल, दून अस्पताल के डा. राजेश मौर्य, विश्व संवाद केंद्र के निदेशक विजय कुमार, विजय कुमार, गगन अग्रवाल, सुमित अदलखा, कृष्ण कुमार अरोड़ा, राकेश थपलियाल, लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल आदि मौजूद रहे।

आयोजन

- देहदान करने वाला व्यक्ति आधुनिक दधीचि के समान
- कहा, आत्मा भगवान का रूप है, जिसको पहचानने की आवश्यकता है
- पुराणों में समाज के लिए मनुष्य जीवन को उपयोगी बताया गया है

8:46 49%

देहदान करने वाले आधुनिक युग के हैं दधीचि : आलोक

सहारा न्यूज ब्यूरो

देहरादून।

वरिष्ठ अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट और दधीचि देहदान संस्था के संस्थापक आलोक कुमार ने कहा कि आज के युग में देहदान से बड़ा कोई दान नहीं है और देहदान करना एक आध्यात्मिक कर्म भी है। उन्होंने कहा कि देहदान करने वाले लोग आधुनिक युग के दधीचि के समान है।

वरिष्ठ अधिवक्ता सुप्रीम कोर्ट और दधीचि देहदान संस्था के संस्थापक आलोक कुमार दधीचि देहदान संस्था की ओर से रविवार को यमुना कालोनी स्थित आफिसर्स क्लब में आयोजित कार्यक्रम में वहीं मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो सेवा और दान के संकल्प के साथ पूरा जीवन जीते हैं। ऐसे लोग संकल्प के इतने पक्के होते हैं कि किसी जरूरतमंद व्यक्ति का जीवन संकटों के उद्देश्य से अपनी देह और अपने अंगों का दान करके जाते हैं।

उन्होंने कहा कि समाज के लोगों को देहदान का संकल्प लेना होगा तभी हमारा देश भारत निरामय बना रहेगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति देहदान का संकल्प ले वह अपने शरीर को जीवनभर स्वस्थ रखने का भी प्रयास करे। इसके साथ उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर देहदान का महत्व भी बताया।

ऋषिकेश एम्स के एनाटमी विभाग के विभागाध्यक्ष डा.सुरेंद्र सिंह ने स्लाइड प्रेजेंटेशन के माध्यम से शरीर रचना विज्ञान की जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि देहदान इतना बड़ा कार्य है कि वसतव में कुछ अच्छे लोगों के देहदान के कारण ही देश में अच्छे डाक्टर तैयार होते हैं। देहदान करने वालों का समाज सदैव ऋणी रहता है। उन्होंने चिकित्सा तरीके से देहदान के बाद अस्पताल में होने वाली प्रक्रियाओं को भी बताया।

कार्यक्रम में पहुंचे दून अस्पताल के एनाटमी विभाग के विभागाध्यक्ष डा.महेन्द्र पंत ने कहा कि शरीर दान का अहसास जाग ही

दधीचि देहदान संस्था के कार्यक्रम में जुटे विशेषज्ञों ने की समाज से देहदान की अपील

किसी चिकित्सक को श्रेष्ठ चिकित्सक बनाता है, जो भी व्यक्ति देहदान का संकल्प ले वो इसकी जानकारी अपने परिवजनों को अवश्य दें। निर्मल आश्रम संस्थान ऋषिकेश के मुख्य संयोजनकर्ता आत्मप्रकाश बाबूजी ने कहा कि देहदान एक बहुत बड़ा संकल्प है। इसके बारे में जागरूकता के लिए स्कूल-कालेजों में भी जनजागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

कार्यक्रम में आशीर्वचन देते पहुंचे पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के आचार्य श्री 1008 स्वामी कैलाशानन्द गिरी ने कहा कि देहदान का संकल्प एक पुण्य कार्य है और इसका उल्लेख वेदपुराणों में भी मिलता है। किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन और राष्ट्रहित में यदि हमारा यह शरीर काम आए तो यह सबसे बड़ा परोपकार है।

देहदान दधीचि के अध्यक्ष डा.मुकेश गोयल ने कहा कि विश्व संवाद केन्द्र के निदेशक व वरिष्ठ प्रचारक विजय कुमार की परिणा से देहदानुए में यह कार्य शुरू हो गया है। मुकेश गोयल ने कार्यक्रम में आए हुए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर कई लोगों ने देहदान एवं नेत्रदान का संकल्प भी लिया। कार्यक्रम का संचालन नीरज कुमार ने किया।

कार्यक्रम में भारत गगन अग्रवाल, सुमित आलखा, कृष्ण कुमार अरोड़ा, नैनीताल हाईकोर्ट के असिस्टेंट सलिसिटर जनरल राकेश थपलियाल, दून अस्पताल के डा.राजेश मौर्य, विश्व संवाद केन्द्र के निदेशक विजय कुमार,संजय, लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल, चंद्र गुप्त विक्रम, आजाद सिंह राणा, विनित मिहल, अरुण चतुर्वेदी, संदीप गुप्ता, शलिकांत गोयल, विजय बनेही, अर्जुनदास, संजय सिक्वल, अनिल डोरा, हरीश कटारिया, चंद्रकांत पांडे आदि लोग भी उपस्थित थे।